



'योग संवाद' ने दिखाई नई सुबह

मुम्बई। उत्तर अरब सागर के किनारों में पुराने मीठान-दुबान विद्या हो रहा था, पर इतने आने के सावधान सावधान के साथ हीतर चुल रहा था नया अकाल, सावधान की नई-नयी शुरु में नया हुआ। चौकले-संकोचों जीवन की बेचैन भावनाएँ एक आधुनिक नवारी से टिक जाते-सोते एक विस्मयान सुख का अनुभव कर रही थी। हाँ! बस, एक साँस-सीही अस्वास्त्वं मूल रही थी, कुछ मात संशयित, कुछ करने का नया योग नहीं है। ...जो दो रहा है, उसे रोकना ही योग है। एत अवकाश में बेहद अपचरन सिधे एक समझदार भी थी। 'हरिर् को सोइम-नरोइम योग नहीं है। योग मन्त्र आरंभ का चोट नहीं है। बस कृपि प्रारंभ पतंजलि के अठारण योग का एक अंग भर है।' यह आवाज भी हरिंदार के सौम्य योग गुरु डॉ. सुरेशित मोस्वामी की और मूकता का नवभारत टाइम्स द्वारा संवेदित विभिन्न 'योग संवाद' का। गुल्जार और सुकन्या को नवभारत से विभिन्न एक-दोरी से हुए योग संवाद-संवा में नवभारत टाइम्स के सैकड़ों पत्रपुक्त पठकों की सखीय दिलचस्पी रही। आचार्य डॉ. सुरेशित मोस्वामी ने इस मौके पर सौन्दर्य योग सूत्रों के

हरिर् सोमों की बस भरी कई मंठों को खोला। एहोने पैनीन जीवन से जुड़े विभिन्न अनेक कथा-परमों के हरिर् योग के अठारों-वग, विरम, अकार, प्राम, प्रारण, प्रवहार और सखीय की महरी और सखीयत भरी सखीयता करते हुए अगह विद्या कि योग को हरिर् के सखीय एक सखीय न किया जाए। एहोने सुखसा विद्या कि योग से अरुण ही सखीय है, उसे एक अरुण है। और यह भी कि किने आरंभ ही योग नहीं है। अरुणों के सखीय योग के अरुण सखीय अठारों को भी सखीय रखा जाए। एही सखीय और सखीयता

नवभारत टाइम्स
धन्यवाद
 गिद्दार के योग गुरु डॉ. सुरेशित मोस्वामी के दो दिवसीय 'पतंजलि योग संवाद' को मिली अभूतपूर्व सफलता

